795
H221P
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
आह्वानांक Call No. _____
अवाप्ति सं० Acc. No. 795

स्वदेश का सन्देश



* राष्ट्रपति जवाहर लाल नेहरू *

इन्द्र पुस्तकालय सआदतगंज लखनऊ।

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
10 DEC. 1930
DEPARTMENT

ओ३म्

स्वदेश का सदेश

गनीम तो कुछ नहीं कि लड़कर किसी का हम तख़्त-ताज लेंगे।
करेंगे जम्हूर की हुकूमत न राज देंगे न राज लेंगे॥
हुकूक़ जायज़ जो हैं हमारे वह हम वसद इहतिजाज लेंगे।
उठ हे अब तो जवां करोड़ो वह कल नहीं बल्कि आज लगे॥

सम्पादक—

पं० अवधबिहारीलाल शर्मा

"विमल"

प्रकाशक—

पं० कन्हैयालाल दीक्षित "इन्द्र"

इन्द्र पुस्तकालय, सआदतगंज लखनऊ

All rights Reserved

प्रथम बार ४०००] सन् १९३० [मूल्य -) मात्र

मुद्रक—पं० मन्नालाल तिवारी,

हरीकृष्ण कार्यालय, शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 795
Date 21:12:71
GOVT OF INDIA

Q 91.431
Sh 23 Sw

* ओ३म् *

स्वदेश का संदेश

१. राष्ट्रीय झण्डा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम-सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरषाने वाला, मातृभूमि का तन मन सारा ॥१॥
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में।
कांपें शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ॥२॥
इस झंडे के नीचे निरभय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा ॥३॥
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा ॥४॥
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
विश्व मुग्ध करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥५॥

२. वन्देमातरम्

क़ौम के ख़ादिम को है जागीर वन्देमातरम् ।
है वतन के वास्ते अक्सीर वन्देमातरम् ॥
ज़ालिमों को है उधर बन्दूक़ पर अपनी ग़रूर ।
है इधर हम बेकसों का तीर वन्देमातरम् ॥
क़त्ल की हमको न दें धमकी हमारे सब्र से ।
तेग़ पर हो जायगा तहरीर वन्देमातरम् ॥
किस तरह भूलूँ इसे मैं जबकि क़िस्मत में मेरी ।
लिख चुका है राक़िमे तहरीर वन्देमातरम् ॥
फ़िक्र क्या जल्लाद ने गर क़त्ल पर बांधी कमर ।
रोक देगा दूर से शमशीर वन्देमातरम् ॥
ज़ुल्म से गर कर दिया ख़ामोश मुझको देखना ।
बोल उटठेगी मेरी तसवीर वन्देमातरम् ॥
सर ज़मी मग़रिब की अब हिल जायगी दो रोज़ में ।
गर दिखायेगी कभी तासीर वन्देमातरम् ॥
संतरी भी मुज़तरिब थे जबकि हर झनकार पर ।
बोलती थी जेल में ज़ंजीर वन्देमातरम् ॥

३. तहज़ीब की काया-पलट

दुश्मने जां अपने तो लंदन के दिलवर बन गये ।
कालों के हम सर वह गेसूये मुनव्वर बन गये ॥
जो हुजूरी आज-कल के जो .खुशामद पर तुले ।
राय साहब कोई औ कोई कलक्टर बन गये ॥
रात-दिन रहने लगा है फांउटेन पेन हाथ में ।
बाबू जी अख़बार के जब से अडीटर बन गये ॥
ए० बी० सी० डी० याद जिस दम हो गई बाबू बने ।
ग्रेजुएट गर हो गये पढ़कर के पिलीडर बन गये ॥

आज-कल के लोग कुछ कम लाट साहब से नहीं।
और ग्रामोफोन के अक्सर गवरनर बन गये॥
पारकों में जाय गुल सिर्फ़ एक सबज़ा रह गया।
त्र भी सब उड़ गये जब से लेवेन्डर बन गये॥
औरतों पर मेम साहब का जो साया पड़ गया।
रोटियां करने को बहरे उनके शौहर बन गये॥
अहले पतलूँ अब करेंगे बैठकर पेशाब क्या।
पढ़ लिया थोड़ी सी अँगरेज़ी तो मिस्टर बन गये॥
नाम बतलाते हुये मां बाप का आती है शर्म।
यह भी तो खुफ़िया पुलिस के इन्सपेक्टर बन गये॥
"शोख" ने खण्डन किया जब मग़रबी तहज़ीब का।
लफ़्ज़ जो निकले ज़बां से तेग़ो खंजर बन गये॥

४. चेतावनी

ग़ज़ल

हुआ है हुक्म यह जारी पहन लो केसरी बाना।
सजाओ सैन अपनी तुम तुम्हें है जङ्ग में जाना॥
सुनो भारत के ऐ शेरो! न दिल में सोच कुछ करना।
सामना मौत का भी हो न चेहरे पर शिकन लाना॥
बुजुर्गों के लहू का कुछ असर हो जिस्म के अन्दर।
शिवा परताप को कर याद तुम भुज दण्ड फड़काना॥
चमक सत्याग्रह भारत में अब जो हो चुका जारी।
बनाओ खुद व घर घर में यही पैगाम पहुँचाना॥
हों चलतीं गनमशीनों की अगर्चे गोलियां सनसन।
दिखाना अपना सीना खोल मत पीछे को हट जाना॥
अगर जो लाठियां तुम पर चलाये यह पुलिस फिर भी।
न करना ओफ़ मुँह से तुम न दिल में अपने घबराना॥

दमन की नीति कर देगी दमन इनको अवश्य मित्रो।
अगर कुछ आह में तासीर है तो देखते जाना॥
अहिंसा के पुजारी बन दिखाओ तुम गनीमों को।
क़दम पीछे नहीं रखते हैं वीरों का यही बाना॥
बढ़ाओ "इन्द्र" तुम अपना क़दम इस युद्ध में पहले।
सभी का ध्येय है भारत को अब आज़ाद करवाना॥

५. भगवान बन गया

ग़ज़ल

जब से यह गांधी का है अस्थान बन गया।
हिन्दोस्तान एक गुलिस्तान बन गया॥
विजयी हुए थे चक्र सुदर्शन चला के कृष्ण।
चर्खा चला के गांधी भगवान बन गया॥
उनकी नसीहतों पै अमल जिसने कुछ किया।
हैवान से फरिश्ता वह इन्सान बन गया॥
आया था जो गुलामों को आज़ाद करने को।
वह गांधी भी जेल का महमान बन गया॥
नाला जो निकला दिल से वतन के मलाल में।
अर्जुन का तीर राम का वह बान बन गया॥
खद्दर से सच्ची लक्ष्मी-पूजा जो दी बता।
हर एक घर है राम का अस्थान बन गया॥
मंदिर बना स्वराज्य का ऐ "शोख" अब तो जेल।
मुश्किल जो काम था हमें आसान बन गया॥

६. चेतावनी

यह है हुक्म गाँधी का ऐ मेहरबानों,
है लाज़िम दिलो जां से तुम इसको मानो।

सुनो क्षत्रियो, वैश्य औ बुद्धिमानो,
सुनो शेख़ सय्यद मुग़ल औ पठानो।
उठो नौजवानो उठो नौजवानो।
वतन अब तो आज़ाद होने की ठानो ॥ १ ॥

बहुत दौलतो इल्म तुम खो चुके हो,
बहुत धर्म से तुम पतित हो चुके हो।
बहुत फ़ाकामस्ती से रो-धो चुके हो,
बहुत ख़्वाब गफ़लत में तुम सो चुके हो।
हो बेदार अब लम्बी चादर न तानो,
उठो नौजवानो उठो नौजवानो ॥ २ ॥

ग़ुलामी से छुटना भी अब पुरख़तर है,
असीरी का ख़ौफ़ और फांसी का डर है।
मगर आज सेहरा तुम्हारे ही सर है,
लगी मातृभूमी की तुम पर नज़र है।
बजाओ तुम अब कौमियत का पियानो,
उठो नौजवानो उठो नौजवानो ॥ ३ ॥

न अब गोखले हैं न हैं लाजपति ही,
न दास औ तिलक हैं न हैं दादा भाई।
नज़रबन्द हैं जेल में गाँधी जी,
तुम्हारी करे कौन फिर रहनुमाई।
जो बाक़ी हैं लीडर हुकुम उनका मानो,
उठो नौजवानो उठो नौजवानो ॥ ४ ॥

ये मौक़ा ग़नीमत है इसको न टालो,
निगाहे तअम्मुल से मत देखो-भालो।
सरे दस्त यह क़ौमी झण्डा उठा लो,
औ हथियार सत्याग्रह के सम्हालो।

पहुँचने की स्वराज्य मन्दिर की ठानो,
उठो नौजवानो उठो नौजवानो ॥ ५ ॥

जो सर पर यह कोहे मुसीबत धरोगे,
न तोप और बन्दूक़ से गर डरोगे।
वतन पर जियोगे वतन पै मरोगे,
तो एक रोज़ स्वराज्य हासिल करोगे।
न ऐ "शोख" इसमें ज़रा झूठ जानो,
उठो नौजवानो उठो नौजवानो ॥ ६ ॥

७. बैठे हैं

ग़ज़ल

उधर अकड़े हुए गोरे बने सरकार बैठे हैं।
इधर मचले स्वशासन के सभी हक़दार बैठे हैं॥
खलक ने रङ्ग बदला है अजब हालत है भारत की।
जो थे कल दोस्त वह ही आज ले हथियार बैठे हैं॥
वह कहते हैं कि डण्डों से दबा कर तुमको रक्खेंगे।
ये कहते हैं कि मर मिटने को हम तय्यार बैठे हैं॥
हमें भी देखना है किस तरह यह चक्र चलता है।
यहाँ मज़दूर तक भी रहने को बेकार बैठे हैं॥
चमकती बिजलियों से आसमां घिर जायगा साहब।
ख़ुदा जाने कि कैसे दोनों में ग्रह चार बैठे हैं॥
मगर इस मर्दुमी पर कौन नहिं शाबास कह देगा।
वह ले तलवार बैठे हैं यह बेहथियार बैठे हैं॥
उधर बख़्तर ढके कन्धे इधर सीना खुला अपना।
मगर फिर भी वह रोता मुँह लिये बेज़ार बैठे हैं॥
हमें है फ़िक्र क्या हालत बनेगी उन वकीलों की।
जो ज़ाहिर पर बने सरकार के बन यार बैठे हैं॥

जिन्होंने मुल्क के अभिमान आज़ादी को तोड़ा है।
उन्हीं के मित्र बनने को बने हुशियार बैठे हैं॥

८. शहीदों की तमन्ना

ग़ज़ल

नाम ज़िन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते।
लाज भारत की बचा जायेंगे मरते मरते॥
जान पर खेल ही जायेंगे अगर हम तो भी।
सैकड़ों को ही जिला जायेंगे मरते मरते॥
रूह तन होंगे जुदा इनको तो होना ही है।
हम तो बिछुड़ों को मिला जायेंगे मरते मरते॥
वह कोई और हैं जो रोके रुलाके मरते।
हम रक़ीबों को हँसा जायेंगे मरते मरते॥
ख़ाक में जिस्म किसी और का मिलता होगा।
हम तो भूखों को खिला जायेंगे मरते मरते॥
तिश्नालब आयेंगे जिस वक़्त रक़ीबे नादां।
ख़ून तक अपना पिला जायेंगे मरते मरते॥
मरने वाले जा मरे आन पै अपनी मरियो।
"चन्द्र" तो ये ही सिखा जायेंगे मरते मरते॥

९. भारतीयों को संदेश

(१)

पतित हो जाते हैं उठता नहीं है सर ग़ुलामी में।
कि बन जाता है जीवन मौत से बदतर ग़ुलामी में।
हज़ारों मिट गई हैं जातियाँ फंसकर ग़ुलामी में।
है आता तर्स उनपर जो रहे हैं मर ग़ुलामी में॥

ज़माने में कहीं भी है नहीं इज़्ज़त ग़ुलामों की।
जहाँ देखो वहीं पर हो रही दुर्गत ग़ुलामों की॥

(२)

अगर है ज़िन्दगी मंज़ूर तो आ जाओ मैदाँ में।
हज़ारों वीर कड़ियाँ फेंकते हैं आज मैदाँ में॥
मिलाते हाँ रहे अब तक बहुत सरकार की हाँ में।
करो निज धर्म की रक्षा खलल आये न ईमाँ में॥
.गुलामी का लगा सदियों से है यह रोग तो छूटे।
असहयोगी बनो अन्यायी से सहयोग तो छूटे॥

(३)

सहारा ग़ैर का क्या देश का तो आसरा तुम हो।
सुखी हो कैसे माता जब .गुलामों से सिवा तुम हो॥
.गुलामी का मरज़ है वैद्य गाँधी हैं दवा तुम हो।
करो साहस ज़माना देख ले तुमको कि क्या तुम हो॥
तुम्हारी मुक्ति की है मुक्त-पूर्वज गिन रहे घड़ियाँ।
लगाओ ज़ोर सब मिलकर तड़ातड़ तोड़ दो कड़ियाँ॥

(४)

स्वयं सेवक बनो सच्चे समझकर मर्म सेवा का।
न समझो खेल इसको है कठिन है धर्म सेवा का॥
पतित जनको उठाना है यही सत्कर्म सेवा का।
बढ़ाओ प्रेम अब बाज़ार कर दो गर्म सेवा का॥
बता हर एक को दो है विजय चर्खे में खद्दर में।
सुना दो राष्ट्र के स्वातन्त्र्य का संदेश घर घर में॥

(५)

विदेशी वस्त्र मत रक्खो .गुलामी की निशानी है।
अगर ग़ैरत है कुछ तुम में अगर कुछ तुम में पानी है॥

तुम्हें खद्दर चिकन है जामदानी कामदानी है।
किसी सूरत से नय्या पार भारत की लगानी है॥

समय है वीरता का बुज़दिली का राग जो छेड़ा।
नहीं फिर बच सकोगे है पड़ा मंझधार में बेड़ा॥

(६)

विदेशी वस्त्र का जो स्वार्थवश व्यापार करते हैं।
वो अपने हाथ अपने देश का संहार करते हैं॥
बने मीठी छुरी हैं मातृभू पर वार करते हैं।
दग़ा करते हैं अपने साथ पापाचार करते हैं॥

स्वयं छल जायँगे छलिया छलेगा इनको छल इनका।
बंधी हैं पाप की गाठें मिलेगा इनको फल इनका।

(७)

अदालत जाना तुम यक जान का जंजाल ही समझो।
बिछाया है वहाँ बर जाल का तो जाल ही समझो॥
गढ़ी जाती है बातें झूठ की टकसाल ही समझो।
वकीलों अहलकारों को दुखी का काल ही समझो॥

ग़रीबों के टकों से जेब अपना गर्म करते हैं।
नहीं यह सोचते दिल में कि हम क्या कर्म करते हैं॥

(८)

वकालत के बिना क्या पेट अपना भर नहीं सकते।
न हो जो नौकरी तो फिर चला क्या घर नहीं सकते॥
मलिन अन्तःकरण है पाप से ये डर नहीं सकते।
दग़ा जो देश से करते हैं वह क्या कर नहीं सकते॥

ज़माना है किधर वह हैं किधर यह तो परख देखें।
हृदय कहता है क्या उनका हृदय पर हाथ रख देखें॥

(९)

गरज़ यह है कि है अवसर कठिन संग्राम का आया ।
बहुत सोये जवानो वक्त है अब काम का आया ॥
उठो बाँधो कमर बीड़ा तुम्हारे नाम का आया ।
अगर मन में तुम्हारे मोह कुछ धन धाम का आया ॥
उसे ममता समझकर व्रत न अपना भंग होने दो ।
विजय होगी तुम्हारी धर्म की यह जंग होने दो ॥

(१०)

पड़ी हों हतकड़ी बेड़ी पड़ा हो तौक़ गर्दन में ।
छिड़ी हो तान आज़ादी की ज़ंजीरों की झनझन में ॥
खड़े हो तान कर सीना निडर गोलों की सनसन में ।
न आये मैल तेवर पर न शंका हो कभी मन में ॥
वली सत्याग्रही का बाल बाँका कर नहीं सकते ।
अमृत पुत्रो ! अमर यश लो अमर हो मर नहीं सकते ॥

"त्रिशूल"

१०. चेतावनी

ग़ज़ल

अगर स्वराज्य भारत में तुम्हें इस साल में लाना ।
तो हर्गिज़ चालबाज़ों के न अब तुम चाल में आना ॥
विदेशी वस्तु को दिल से करो अब दूर ऐ मित्रो ।
तुम अपने देश का धन अब विदेशों में न भिजवाना ॥
अगर आपस के झगड़े हों तो उनको तै करो घर में ।
कचहरी फौजदारी में न हरगिज़ माल में जाना ॥
अगर यह वक्त हाथों से गँवाया तो समझ लेना ।
तो पशुओं की तरह सदहा तुम्हें है ठोकरें खाना ॥

सदा जकड़े रहोगे फिर ग़ुलामी की ज़ँजीरों में।
जो छोड़ा ध्येय अपना तो है मुश्किल पार ही पाना॥
परिश्रम हम करैं डटकर मज़े लूटें वो लन्दन में।
तुम्हें अब ऐसी शैतानी हुकूमत को है मिटवाना॥
मनाने को हमें करते हैं बैठक गोल टेबुल की।
न हरगिज़ ऐसे मक्कारों पै अब इतबार तुम लाना॥
ये कहते "इन्द्र" हैं तुम से सुनों भारत के ऐ वीरो।
वतन आज़ाद अब करलो न ग़ैरों के सहो ताना॥

११. पैदा होंगे हज़ार गाँधी

ग़ज़ल

उजाड़ था हिन्द का ये गुलशन है इसमें लाये बहार गांधी।
खुशी से अब तू ऐ बुलबुले दिल पुकार गांधी पुकार गांधी॥
था शाद दुश्मन कि हमने उनको फँसा के क़ाबू में कर लिया है।
मगर नहीं कुछ पता था उनको कि पैदा होंगे हज़ार गांधी॥
है मोतीलाल और मालवी जी सुभाषचन्दर व हैं जवाहर।
दिखाई देते हैं साथ गांधी के आज ही चारों चार गांधी॥
न माल दौलत की चाह उनको न अपने सुख दुख की उनको परवा।
निसार सब कुछ किये हुए हैं वतन पै होकर निसार गांधी॥
ज़बां पै उनकी बसा है खद्दर बना है पोशाक क़ौमी खद्दर।
है आज खद्दर पै मेहर उनकी पुकारता तारो तार गांधी॥
वह जेल में रक्खो ग़म उठावें अज़ीज़ों से भी न मिलने पावें।
क्या ऐसे ही वक्त हम न जायें किया करें इन्तिज़ार गांधी॥
"त्रिशूल" ये वक्त काम का है जहाज़ गिर दांव में फँसा है।
न छोड़ा हिम्मत जो हिन्दियों ने लगायेंगे बेड़ा पार गांधी॥

---

१२. गोलियों की बौछार

हटो जी ज़ालिमों को ज़ुल्म की सीमा बढ़ाने दो।
हमें गर्दन झुकाने दो उन्हें खंजर चलाने दो॥
बली हो जायें वे इस दम हिरण्यकश्यप से भी ज़्यादा।
हमें प्रह्लाद बन के आज उनसे पेश आने दो॥
नतीजा उनकी करनी का निकल आयेगा दम भरमें।
ख़ुदा की भी ख़ुदाई पर उन्हें क़ब्ज़ा जमाने दो॥
तमाशा दूर से देखो हमारे हाल का भाई।
हमारा जिस्म तीरों का उन्हें तरकश बनाने दो॥
किया जो कुछ उन्होंने और जो कुछ हो अभी बाक़ी।
बक़ाया अपनी हसरत का उन्हें हमसे चुकाने दो॥
ज़माना देख लेगा कौन राहे हक़ पै साक़िर है।
ज़रा इंसाफ़ वाले को ख़बर यह यार पाने दो॥
करें वे सख़्तियाँ जितनी हमारा काम उतना हो।
उन्हें डायर का ड्रामा हर जगह करके दिखाने दो॥
करेंगे मुल्क की ख़िदमत चलेंगे उठके गिर गिरके।
हरज क्या भाइयो अब राह में काँटे बिछाने दो॥
"शरण" अब गोलियाँ खाकर ख़ुशी से जेलमें जाकर।
अब अपनी क़ौमियत सोई हुई हमको जगाने दो॥

१३. आत्म बलिदान

दामन को ख़ूं से रङ्ग लो अर्मान रह न जाये।
माथा तुम्हारा प्यारा परेशान रह न जाये॥
भारत के आर्य वीरो माता का ऋण चुका दो।
ताके तुम्हारे सर पर एहसान रह न जाये॥
मुस्लिम व हिंदू मिलकर लज्जा को अपनी रखलो।

गाँधी का एक भी कुछ फ़रमान रह न जाये ॥
पीकर मये मुहब्बत कर दो स्वतन्त्र भारत ।
भूमी है स्वर्ग तेरी वीरान रह न जाये ॥
देशों में देश सब के सरताज एक तुम हो ।
रखना क़दम सम्हल कर शैतान रह न जाये ॥
आओ चला के चर्खा अब "राम" को रिझाये ।
दुश्मन को ताके यारों मैदान रह न जाये ॥

१४. चरखा

ग़ज़ल

तुमने दिन रात अगर काम किया चरखे से ।
फतह दुश्मन से दिलायेगा खुदा चरखे से ॥
करके बरबाद हमें ग़ैर जो आज़ाद हुए ।
आया उनके तईं पैग़ाम क़ज़ा चरखे से ॥
पास तलवार नहीं अपने नहीं राम इसका ।
हम मिटा देंगे सितमगर की जफ़ा चरखे से ॥
मालवी गाँधी मोती व जवाहर प्यारे ।
कह रहे हैं कि करो जुल्म फना चरखे से ॥
दरदे पंजाब वाले और खिलाफ़त की भी ।
कोई दुनियां में नहीं बढ़के दवा चरखे से ॥

१५. जुल्म का पौदा उखड़ जाने को है

ग़ज़ल

हिन्द में फ़स्ले बहारे अब तो बस आने को है ।
सरसरे जुल्मों सितम नाबास हो जाने को है ॥
बे खता मारे गये हैं लाठी औ बन्दूक से ।
इसलिये यह जुल्म का पौदा उखड़ जाने को है ॥

करले नेकी अब तो जो कुछ कर सके इस हिंद पर।
ज़ालिमाना ज़ुल्म तेरा जल्द मिट जाने को है॥
ज़ख्म ताज़ा वाकये पंजाब कब भूलेंगे हम।
अपना भी कोई वक्त ज़ालिम एक दिन आने को है॥
छोड़कर इस मुल्क को अपने वतन की ले पनाह।
रह गये तो फिर तुझे गाँधी भी ठुकराने को है॥

---

१६. देश-भक्त महिला की गर्जना

ग़ज़ल दादरा

देश भक्तो का बीड़ा चबाऊँगी मैं।
देर बहनों न नेक लगाऊँगी मैं॥
शेर—घर २ नगर २ मैं ग्राम २ में फिरकर।
गाँधी का संदेश मैं सुनाऊँगी हो निडर॥
वस्त्र सारे विदेशी जलाऊँगी मैं॥ देर०
शेर—रूसिश का पहले खूब लगाऊँगी मैं पता।
फिर हिन्दू मुस्लिमों में कराऊँगी एकता॥
भेद भाव कुभाव नशाऊँगी मैं॥ देर०
शेर—छोटी बड़ी समस्त जातियों को मिलाकर।
झगड़ा सदा के वास्ते आपस के भुलाकर॥
छुआछूत का भूत भुलाऊँगी मैं॥ देर०
शेर—भारत की नारियों में अविद्या का राज है।
इससे ही दुखी देश औ सारा समाज है॥
विद्या पढ़ने के सीख सिखाऊँगी मैं॥ देर०

शेर—नारी सुधार होने में जितनी ही देर है।
प्यारे स्वराज्य होने में उतनी ही वेर है॥
पाठ बहनों को यही पढ़ाऊँगी मैं॥ देर०

शेर—सच्ची पतिव्रतायें जब मैदाँ में आयेंगी।
दुष्टों की सारी दुष्टता पल में मशायेंगी॥
चाल बाज़ों की चाल भुलाऊँगी मैं॥ देर०

शेर—भारत की देवियों ने है जब २ समर किया।
भारी से भारी शत्रुका सर काट धर दिया॥
न्यायकारी का हुक्म बजाऊ गी मैं॥ देर०

शेर—गर मर्द ओढ़ ओढ़नी सारी को पहनकर।
बैठेंगे घर के कोने में नारी का रूप धर॥
तो भी छक्के उदूके छुटाऊँगी मैं॥ देर०

शेर—कहते "विमल" ये मित्रवर कविता प्रचंड की।
जड़ टूट जाय कूट नीति के घमण्ड की॥
कर में झण्डा तिरंगा उठाऊँगी मैं॥ देर०



विमल ग्रन्थ माला तथा हिन्दू समाज सुधार
कार्यालय की सब किताबें हमारे
यहां मिलती है।

स्वराज्य का तेरामासा

हमारे यहां छपा तैयार है बेचने वालों को किफायत
से मिलता है।

पता:— इन्द्र पुस्तकालय सआदतगंज, लखनऊ।

सिर्फ टायटल पेज अपर इंडिया प्रिंटिंग प्रेस लखनऊ में छपा